विरलो विलोड़े, को मखणु कढे मन मों,
करे मांधाणी मन जी, थिरता थंभ खोड़े,
सेली पाए सच जी, जुगति सां जोड़े,
ड्रिसे मुंहुं मोड़े, पांहिंजो अखिएं पाण खे.

अपना मन-मंथन करने वाले दुर्लभ व्यक्ति के विषय में एक रूपक का प्रयोग कर सामीजी कहते हैं कि संसार में कोई एक व्यक्ति दिखाई देगा, जो अपने मन को मथ कर उसमें से माखन निकालता है। अपवाद रूप में दिखाई देने वाला ऐसा विवेकवान व्यक्ति प्रेम रूपी मथनी लेकर, (चित्त की) स्थिरता रूपी खंभा गाड़कर मथने का काम करता है। वह सत्य की सेली (टोपी) पहन कर युक्ति से मंथन करता है। तब वह अपने ही भीतर झाँक कर अपने नेत्रों से स्वयं को (अंतरात्मा को) देख लेता है। (यहाँ अंतरात्मा/ईश्वर माखन है। मन मथनी है। मन की स्थिरता खंभा है, सत्य/सत्यता टोपी है, साधना/भक्ति युक्ति है।)

मनुष्य के रूप में जन्म लेकर आने वाला हर व्यक्ति सुख-संतोष और आनंद प्राप्त करना चाहता है। माया-जाल में फंसा हुआ जीव उधर भटकता रहता है सुख की तलाश में । इस तलाश में परमेश्वर की कृपा, परमेश्वर के दर्शन को वह अधिक महत्व देता है। अज्ञानी जीव यह तथ्य भुला देता है कि मैं स्वयं ही परमात्मा का अंश हूँ और परमात्मा मेरे अंदर है, मन में है। अत: वह परमेश्वर को बाहर ही ढूँढने का प्रयत्न करता रहता है। अनेक मार्गों का अवलंब कर परमेश्वर को पाने की इच्छा उसके मन में कम अधिक प्रमाण में रहती ही है। परंतु उसका ध्यान अपने कलुषित, मलीन और विकार ग्रस्त मन की ओर नहीं जाता। अगर जाता भी है, तो वह अपने मन में स्थित षड् रिपुओं से लड़ नहीं सकता। काम, क्रोध, लोभ आदि विकारों को अपने मन से निकाल कर मन निर्मल बना नहीं सकता। अविद्या के आवरण के कारण वह अपने मन में झाँकने का, मन-मंथन करके का आत्म स्वरूप को पहचाने का प्रयत्न नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप वह परमेश्वर के दर्शन एवं यथार्थ सुख-संतोष तथा आनंद से वंचित रह जाता है।

सामी साहब मानते हैं कि ईश्वर दर्शन या मुक्ति भी प्रयत्न साध्य है। वह अपने आप ही मिलने वाली वस्तु नहीं है। इसके लिए जतन करने पड़ते हैं। सर्वप्रथम सतगुरु के मार्गदर्शन में किसी भक्ति-मार्ग का अवलंब करने के पूर्व मन मंथन करना जरूरी है । मन विकार रहित होने के बाद ही परमेश्वर रूपी नवनीत की प्राप्ति हो सकेगी। बिना इस क्रिया-प्रक्रिया के प्रभु के दर्शन नहीं हो सकेंगे।

■